Vol 4 Issue 7 April 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research ISSN : 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | April-2015 Available online at www.ror.isrj.org

Hkkjrh; js'ke mRiknu dh n'kk ,o fn'kk % ,d fo'y"k.kkRed v/;;u

euh"kk nqcs
vkpk;Z ,o foHkkxk/;{k] vFk'kkL= foHkkx] x:?kklhnkl fo'ofo|ky; fcykliqj N-x-

Co - Author Details :
uhye cqxe vUlkjh
'kks/k Nk=k] vFk'kkL= foHkkx] x:?kklhnkl fo'ofo|ky; fcykliqj N-x-

सारांश

''वस्त्रो की रानी'' की संज्ञा से सुषोभित रेशम की उत्पादन संबंधी गतिविधियाँ उच्च रोजगार सृजन क्षमता, न्यून पूंजी आवश्यकता एवं प्राकृतिक उत्पादन की विषेशताओ से युक्त है। रेशम उत्पादन संबंधी गतिविधियाँ मुख्यतः श्रम प्रधान होने के कारण भारत जैसे विकासशील देश के समाजिक एवं आर्थिक विकास की दृष्टि से बेहतर है। प्रस्तुत शोध पत्र मे भारत के संदर्भ मे रेशम उत्पादन की स्थिति का अध्ययन किया गया है, साथ ही इसके आयात निर्यात स्थिति का भी यथोचित अध्ययन कर इससे संबंधित समस्याओ को रेखांकित कर उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

प्रस्तावना

रेशम उत्पादन की दृष्टि भारत विश्व मे चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक राष्ट्र है। वैश्विक कच्चे रेशम उत्पादन मे 13.41 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ भारत की स्थिति मजबूत बनी हुई है। रेशम भारतीय संस्कृति एवं जीवन में घुला मिला है। भारत के संदर्भ में रेशम इतिहास का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यह अत्यंत रोचक एवं सम्पन्न रहा है। भारत में रेशम का व्यापार 15वीं शताब्दी से किये जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए है। वर्तमान में भारत के शहरी एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में लगभग 7.56 मिलियन2 लोगों की अजीविका का माध्यम रेशम उत्पादन सम्बन्धी गतिविधियाँ है, जिसमे एक बड़ी संख्या आर्थिक रुप से कमजोर, पिछड़े एवं महिलाओं की है। भारतीय रेशमी वस्त्र बुनकरो ने अपनी निपुणता व दक्षता के आधार पर भारत के रेशम उद्योगों को एक महत्वपूर्ण पहचान दिलाई है। भारत, विश्व में एक मात्र अनूठा विशिष्टता प्राप्त देश है, जिसे रेशम की ज्ञात सभी

वाणिज्यिक किस्मों में से पांच वाणिज्यिक किस्मों यथा शहतूती, ट्रापिकल टसर, ओक टसर, ईरी व मूंगा को उत्पादित करने का गौरव प्राप्त है जिसमें मूगा, रेशम एक पीली सुनहरी आभा से युक्त रेशम है, जिसके उत्पादन में भारत को विशिष्टता प्राप्त है।

उद्देश्यः—

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारत मे रेशम उत्पादन, आयात–निर्यात स्थिति का अध्ययन कर इससे सम्बन्धित समस्याओ को रेखांकित करना है।

विश्व में कच्चे रेशम का उत्पादन

तालिका क्र. 1
(रेशम उत्पादन मिलियन टन में)

n'k @o"k	2008	2009	2010	2011	2012
phu	98620	84000	115000	104000	126000
Hkkjr	18370	19690	20410	23060	23679
ckthy	1177	811	770	558	614
b.Mkuf'k;k	37	19	20	20	20
bjku	180	82	75	120	123
tkiku	96	72	54	42	30
mRrjh dkfj;k				300	300
FkkbyaM	1100	665	655	655	655
rqdh	15	20	18	22	22
mtcfcdLrku	770.5	780	940	940	940
fo;ruke			550	500	450
vU;	30.5	30	31	47	57
;kx	120396	106169	138505	129684	152868

स्त्रोतः— note on the performance of Indian silk industry and funcitioning of central silk board (Dec.2013) ministry of india

तालिका क्रमांक –1 में विश्व के कच्चे रेशम उत्पादन की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। जिसके विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ष 2011 में कच्चे रेशम का उत्पादन 129684 मिट्रिक टन रहा जो 2012 में 17.88 प्रतिशत वृद्धि के साथ कच्चे रेशम का उत्पादन 152868 के मिट्रिक टन के उच्च स्तर पर पहुँच गया है, जिसमें चीन की स्थिति यथावत् अग्रणी बनी रही। वर्ष 2012 के कुल कच्चे रेशम उत्पादन में अकेले चीन की हिस्सेदारी 82.41 प्रतिशत अर्थात् 1,26,000 मिट्रिक टन के उच्च स्तर पर रही जबकि भारत की हिस्सेदारी 15. 49 प्रतिशत (23679 मिट्रिक टन) रही। ज्ञातत्य हो कि वैश्विक स्तर पर कच्चे रेशम उत्पादन में चीन का स्थान प्रथम एवं भारत का द्वितीय है। जहाँ एक ओर वैश्विक स्तर पर कच्चे रेशम उत्पादन की दृष्टि से भारत एवं चीन की स्थिति और मजबूत हुई है। वहीं दूसरी ओर अन्य रेशम उत्पादक देशों में पिछले दो दशकों के दौरान रेशम उत्पादन में गिरावट दर्ज की गई है जिसकी पुष्टि तालिका क्र. 1 में दिए आँकड़ो से की जा रही है।

तालिका क्र. 2

भारत मे कच्चे रेशम का उत्पादन 2000–2001 से 2012–13 की अवधि मे (मिट्रीक टन मे)

o"k	"kgrh j'ke	ifr'kr of)	xj 'kgrh j"ke						'kgrh mRiknu	dy j'ke mRiknu	ifr'krof) nj
			Vlj	ifr'kr of)	bjh	ifr'kr of)	exk	ifr'kr of)			
2000-01	14432	--	237	-	1089	-	99	-	1425	15857	-
2001-02	15842	9.77%	249	5.06%	1160	6.52%	100	1.01%	1509	17351	9.42%
2002-03	14617	-7.73%	284	14.05%	1316	13.44%	102	2.00%	1702	16319	-5.95%
2003-04	13970	-4.43%	315	10.92%	1352	2.74%	105	2.94%	1772	15742	-3.53%
2004-05	14620	4.65%	322	2.22%	1448	7.10%	110	4.76%	1880	16500	4.81%
2005-06	15445	5.64%	308	-4.35%	1442	-0.41%	110	0	1860	17305	4.88%
2006-07	16525	6.99%	350	13.63%	1485	2.98%	115	4.54%	1950	18475	6.76%
2007-08	16245	-1.69%	428	22.28%	1530	3.03%	117	1.74%	2075	18320	-0.84%
2008-09	15610	3.90%	603	40.88%	2038	33.20%	119	1.71%	2760	18370	0.27%
2009-10	16322	4.56%	803	33.16%	2460	20.70%	105	-11.76%	3368	19690	7.18%
2010-11	16360	0.23%	1166	45.20%	2760	12.19%	124	18.03%	4050	20410	3.66%
2011-12	18272	11.68%	1590	36.87%	3072	11.30%	126	1.61%	4788	23060	12.98%
2012-13	18715	2.42%	1729	8.74%	3116	1.43%	119	-5.55%	4964	23679	2.68%
;ksx	206975	-	8384	-	24268		1451	-	34103	241078	-
ek/;	15921		644.92		1886.76		111.61		2623.30	21167.61	
ifr"kr	85.85 %		3.47%		10.06		0.60%		14.14		

स्त्रोतः–केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड बिलासपुर शाखा (छ.ग.)

तालिका क्रमांक–2 के विश्लेशणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्श 2000–2001 से वर्श 2012–2013 की अवधि में भारत का कुल कच्चा रेशम उत्पादन 23,679 मिट्रिक टन रहा है। कुल कच्चे रेशम उत्पादन में शहतूती एवं गैर शहतूती कच्चे रेशम का उत्पादन की हिस्सेदारी क्रमशः 18,715 मिट्रिक टन (79.04 प्रतिशत) तथा 4,964 मिट्रिक टन (20.96 प्रतिशत) रही । जबकि गैर शहतूती रेशम उत्पादन मे टसर, ईरी एवं मूगा का प्रतिशत क्रमशः 34.83 प्रतिशत, 62.73 प्रतिशत एवं 2.44 प्रतिशत है। भारत के कुल कच्चे रेशम उत्पादन मे शहतूती रेशम का हिस्सा अधिकतम 79.03 प्रतिशत है, जबकि गैर शहतूती रेशम (टसर, ईरी, मूगा) का हिस्सा 20.96 प्रतिशत है। शहतूती रेशम उत्पादन मुख्य रुप से भारत के पांच राज्यों कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और जम्मू कश्मीर में किया जाता है। भारत के कुल शहतूती रेशम उत्पादन में उक्त पांच राज्यों का हिस्सा संयुक्त रुप से 94 प्रतिशत3 है। ज्ञातव्य हो कि इन पांच राज्यों द्वारा उत्पादित रेशम विशेश गुणवत्ता युक्त होता है। नये किस्म के रेशम का सर्वाधिक उत्पादन जम्मू कश्मीर एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र जैसे मणिपुर, असम में किया जाता है। गैर शहतूती रेशम टसर का मुख्य उत्पादक राज्य झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा है। भारत के कुल टसर रेशम उत्पादन में झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ का स्थान क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय है। वर्ष 2012 – 13 में भारत में कुल कच्चे रेशम की खपत लगभग 28,630 मिट्रिक टन रही, जबकि उत्पादन उक्त वर्ष में 23679 मिट्रिक टन रहा अतः रेशम उत्पादन की अतिरिक्त मांग की आपूर्ति हेतु अतिरिक्त 5000 मिट्रिक टन अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता युक्त कच्चे रेशम का आयात मुख्य रुप से चीन से किया जाना पाया गया।[4]

तालिका क्रमांक 3
भारत मे कच्चे रेशम का आयात

Ø-	o"k	ek=k ¼ fefVd Vu e½
1	2000-01	4713
2	2001-02	6808
3	2002-03	9054
4	2003-04	9258
5	2004-05	7924
6	2005-06	8334
7	2006-07	7800
8	2007-08	7922
9	2008-09	8392
10	2009-10	7338
11	2010-11	5820
12	2011-12	5683
13	2012-13	4951

स्त्रोतः—केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड बिलासपुर (छ.ग.)

भारत में कच्चे रेशम के आयात की मात्रा को तालिका क्र0—3 में प्रदर्शित किया गया है। तालिका के विश्लेषणात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि भारत मे कच्चे रेशम के आयात में पिछले पांच वर्षो में गिरावट आई है, यद्यपि यह गिरावट उत्साह जनक तो नहीं मानी जा सकती, किन्तु इसे कच्चे रेशम हेतु भारत की दूसरे देशों पर निर्भरता में कमी के नजरिये से अच्छा संकेत माना जा सकता है, या दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि भारत के कच्चे रेशम उत्पादन की स्थिति पहले से और बेहतर एवं मजबूत हुई है। वर्ष 2012—13 की अवधिं भारत के कच्चे रेशम के आयात में प्रतिशत वृद्धि पूर्व वर्ष 2011—12 की तुलना में ऋणात्मक 12.88 प्रतिशत रही यद्यपि आयात मूल्य जो कि वर्ष 2011—12 में 1111.53 करोड़ रु. था वह 2012 —13 की अवधि में 0.112 प्रतिशत की मामूली वृद्धि के साथ 1236.83 करोड़ रु. के स्तर पर रहा, जिसका मुख्य कारण कच्चे रेशम के मूल्य में वृद्धि होना एवं दूसरी ओर भारतीय रुपये में गिरावट की स्थिति रही।

तालिका क्र0—4
भारत में रेशम का निर्यात मूल्य
2000—2001 से 2012—13 की अवधि पर (करोड़ रूपये में)

Ø-	o"k	fu;kreY;
1	2000-01	2421.98
2	2001-02	2359.58
3	2002-03	2294.05
4	2003-04	2779.19
5	2004-05	2747.68
6	2005-06	2879.58
7	2006-07	2740.30
8	2007-08	2727.87
9	2008-09	3178.19
10	2009-10	2892.44
11	2010-11	2863.76
12	2011-12	2353.33
13	2012-13	2303.53
;kx	-	31801.18
lekUrjek/;	&	2446.24

स्त्रोतः— http//www.csb.gov.in/statistics/silk-bulletin

तालिका क्र0 4 में वर्ष 2000—01 से 2012—13 की अवधि में भारत के निर्यात आय को दिखाया गया है। ज्ञातत्य हो की भारतीय रेशम तथा रेशमी वस्तुओं का निर्यात मुख्य रुप से भारत के परम्परागत वृहद बाजार जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय देशों तथा एशिया के कुछ भागों के छोटे बाजारों में किया जाता है। अध्ययन अवधि में यह पाया गया कि भारत को प्राप्त निर्यात आय अथवा निर्यात मूल्य औसतन 2446.25 करोड़ रु रही। वर्ष 2008—09 के अतिरिक्त अन्य सभी वर्षों में भारत की रेशम निर्यात आय में मामूली उतार—चढाव की प्रवृत्ति विद्यमान रही। वर्ष 2008—09 में भारत के रेशम निर्यात आय में पिछले वर्ष की तुलना में शानदार बढ़त रही जिसका मुख्य कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारी मंदी एवं मूल्यों के गिरावट की प्रवृत्ति ने अमेरिकन डॉलर के विरुद्ध भारतीय रुपये के मूल्य को तेजी से गिरा दिया, जिसने भारतीय रेशमी वस्तुओं की निर्यात आय को 2008—09 में 3178.19 करोड़ रुपये पर पहुँचा दिया। पिछले वर्ष 2007—08 की तुलना में वर्ष 2008—09 की निर्यात आय में 16.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, अर्थात् 2007—08 में भारत द्वारा अर्जित रेशम निर्यात आय 2727.87 करोड़ रुपये रही, जबकि 2008—09 के बाद के वर्षो में रेशम की निर्यात आय के दिए आंकड़ो से स्पष्ट होता है कि इसमें गिरावट की प्रवृत्ति विद्यमान रही है। भारत के रेशमी उत्पादों में रेशमी वस्त्रों की मांग सर्वाधिक रही है। भारतीय बुनकरों द्वारा निर्मित रेशमी वस्त्र सम्पूर्ण विश्व में अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध रहे है। जिसकी पुष्टि इस वक्तव्य से की जा सकती है कि ''ईस्ट इंडिया का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश माल के लिए बाजार तलाश करना नहीं था, बल्कि उसका प्रयत्न भारत के समान खासतौर पर मसाले और रेशमी कपड़ों की सप्लाई पर कब्जा करना था, क्योंकि इंग्लैण्ड और यूरोप में इन चीजों की काफी मांग थी।(दत्त 1990)''5 वर्ष 2008—09 की अवधि में भारतीय रेशमी उत्पादों के निर्यात में प्रमुख हिस्सेदारी रेशमी वस्त्रों की रही है। वर्ष 2008—09 तथा 2011—12 में रेशमी वस्त्रों के निर्यात मूल्य में क्रमशः 13.01 प्रतिशत तथा 7.27 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। अन्य रेशमी उत्पादों जैसे रेडीमेड वस्त्रों, प्राकृतिक रेशमी धागों, रेशम रद्दी के निर्यात मूल्य में मामूली उतार—चढ़ाव की प्रवृत्ति विद्यमान रही।

रेशम उत्पादन की सभी गतिविधियां श्रम प्रधान तथा कृषि के सहायक व्यवसाय व वन आधारित व्यवसाय के रूप में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जीवतंता प्रदान करने वाली है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। भारत के प्राण ग्रामों में बसते है, देश की आत्मा कृषि में''। वर्ष 1950—51 में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत था जो 2012—13 तक गिरकर 13.86 के निम्न स्तर पर पहुँच गया है किन्तु 54.6 प्रतिशत7 श्रम शक्ति अब भी प्रत्यक्ष—अप्रत्यक्ष रूप से अपनी अजीविका हेतु कृषि पर निर्भर है, जिसने कृषि संकट की स्थिति को निर्मित कर दिया है। कृषि विकास के निरंतर गिरते हुए ग्राफ को देखते हुए नीति निर्माताओं एवं नियोजकों द्वारा यह तर्क दिया जा रहा है, कि कृषि के विकास के साथ साथ कृषि के सहायक व्यवसायों को भी विकसित करने की नितांत आवश्यकता है। इस दृष्टि से रेशम उद्योग कृषि के सहायक व्यसाय के रुप में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाये हुए है। भारतीय रेशम उद्योगो मे ना केवल निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा अर्जित करने की क्षमता विद्यमान है, अपितु श्रम प्रधान उत्पादन संबंधी गतिविधियो के माध्यम से भारतीय रेशम उद्योग द्वारा किया गया रोजगार सृजन काफी प्रभावशाली एवं प्रशंसनीय रहा है। वर्ष 2012—13 में 7.65 मिलियन8 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया, जबकि 2011—12 में 7.56 मिलियन9 व्यक्तियों तक ही सीमित था, अर्थात् 2012—13 में इसमें 1.19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई एवं साथ ही रेशम उद्योग में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों में एक बहुत बड़ी संख्या समाज के कमजोर एवं पिछड़े लोगों की है, जिसमें महिलाएं भी सम्मिलित है। कृषि का विकास कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को सहारा देने के साथ—साथ रेशम उद्योग द्वारा विदेशी व्यापार की दिशा में भी प्रशंसनीय भूमिका का निर्वहन किया जा रहा है। रेशम तथा रेशमी उत्पादों के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है। वर्ष 2012—13 में इसके निर्यात से 2303.53 करोड़ रुपये10 विदेशी मुद्रा अर्जित की गई।

कृषि/वन्य आधारित रेशम उद्योग ग्रामीण स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तक अपनी स्थिति को मजबूत कर रेशम आज एक उच्च मूल्य के उत्पादों में शामिल है।

किन्तु अन्य उद्योगो की भांति अपनी कुछ मूलभूत समस्याओ के कारण विश्व के कुल वस्त्र उत्पादन मे रेशम की हिस्सेदारी मात्र 0.2 प्रतिशत11 है। मौसम की मार, रेशम उत्पादन हेतु ग्रामीण स्तर पर मूलभूत सुविधाओ का अभाव, जरूरत के मुताबिक बजट आबंटन, प्रभावशाली जागरूकता एवं प्रशिक्षण का अभाव साथ ही इस दिशा

मे उन्नत एवं सफल शोधो का नितान्त अभाव है, जो कि रेशम उद्योग के विकास की धीमी गति हेतु जिम्मेदार है। इस दिशा में उपायों के रूप में ना केवल सकारात्मक प्रयास एवं नीतियां पर्याप्त होगी, अपितु उनकी ऐसी रूप रेखा तैयार करने की आवश्यकता हैं जिससे ना केवल भारतीय रेशम उत्पादों की मांग–आपूर्ति के अंतर को पाटा जा सके, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा मे भी भारतीय रेशम उ़द्योग मजबूती से अपने को खड़ा कर पायें। जरूरत इस बात कि है कि सारे उपायो को जमीनी स्तर से जोड़ा जाये। उत्पादन की प्रारंभिक इकाई अर्थात ग्रामीण स्तर पर ही रेशम उत्पादन हेतु आवश्यक बुनियादी सुविधाएँ एवं प्रभावशाली प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये। देशी उद्योग के रूप मे स्थापित रेशम उद्योग को विदेशी प्रतिस्पर्धा मे टिकने हेतु रेशम कृमि खाद्य वृक्षारोपण से लेकर वस्त्र बुनाई तक के सभी चरण को एक सीमा तक वैज्ञानिक मानको पर आधारित करने की जरूरत है। निष्कर्षतः ''मिट्टी से रेशम'' तक की प्रक्रिया मे परंपरागत एवं आधुनिक उत्पादन विधि के ऐसे संतुलित मेल की जरूरत है, जिससे इसके श्रम प्रधान उत्पादन गतिविधियों के साथ इसके देशी स्वरूप को बनाऐ रखा जा सके। वैश्विक आधुनिक मांग को पूरा करने मे सक्षम एवं विकसित उद्योगो कि श्रेणी मे शामिल करने हेतु एक शर्त के रूप मे मान्यता दी जाने कि आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

पुस्तके :–

राय, सत्या (1990). भारत में उपनिवेशवाद. नई दिल्ली : इनाश्री
गुप्ता, एस.सी. एवं अग्रवाल, एम.डी. (2007). आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था, नई दिल्ली : विश्व भारती
मिश्र, एस.के. एवं पुरी, वी.के. (2004) भारतीय अर्थव्यवस्था नई दिल्ली : हिमालया हाउस
ममोरिया, चतुर्भुज (2004). आर्थिक संसाधन. आगरा : साहित्य भवन
शुक्ल, एस.एम. एवं सहाय. शिवपूजन (2004). परिमाणात्मक पद्धतियाँ. आगरा : साहित्य भवन
शर्मा, एच.आर. (1994). प्रोडक्सन प्लानिंग एण्ड कंट्रोल कॉनसेप्ट एण्ड एप्लीकेशन. नई दिल्ली : दीप एण्ड दीप
ठाकुर, डी. (1994). मार्केटिंग एण्ड सेल्स मैनेजमेंट. नई दिल्ली : दीप एण्ड दीप
शर्मा, आर.डी. (1994). डिजानिंग एण्ड मैनेजिंग ऑफ मर्केटिंग रिसर्च. नई दिल्ली : दीप एण्ड दीप
सक्सेना, एस.सी. (1990). प्रबंध के सिद्धांत. आगरा : साहित्य भवन.
सक्सेना, आर.बी. (1990) व्यवसायिक अर्थशास्त्र. इलाहाबाद : किताब महल
भदादा, बी.एम. एवं पोरवाल, बी.एल. (1990). विपणन एवं प्रबंध के सिद्धांत. जयपुर : साहित्य भवन
पन्त, डी.सी. (2009). भारत में ग्रामीण विकास. नई दिल्ली : विश्वभारती.

समाचार पत्र :–

कुमार, ए. (2014, मार्च 3). 'कृषि पर निर्भरता'. हरिभूमि, पृष्ठ–6
शर्मा, डी. (2013, फरवरी 20). 'सुरक्षित रहे किसानों की आय' : अमर उजाला, पृष्ठ–10
सिन्हा, एम. (2013, जून 16) 'आर्थिक सुधारों की इतनी छटपटाहट' : अमर उजाला, पृष्ठ–4
महाजन, ए. (2009, जनवरी 28). 'कृषि क्षेत्र ही हमें मंदी से बचाएगा'. अमर उजाला, पृष्ठ–4
सोमवंशी, पी. (2009, जनवरी 21). 'विकास के इंजन का हाल', अमर उजाला, पृष्ठ–4
झुनझुनवाला, बी. (2012, अक्टूबर 23). 'आर्थिक सुधारों की सुदिशा' : स्वतंत्र भारत, पृष्ठ–8
रपरिया, आर. (2011, दिसम्बर 18).'संकट में अर्थव्यवस्था' : अमर उजाला, पृष्ठ–6
पटनायक, पी. (2012, जून 21). 'चमक खोती अर्थव्यवस्था के कारण' : नई दुनिया, पृष्ठ–4
जी. डी. पी. में कृषि का योगदान घटा. (2012, दिसम्बर 12). हरिभूमि, पृष्ठ–8
प्रचुर संसाधन–अप्रार संभावनाएँ. (2012, नवम्बर 2). हरिभूमि, पृष्ठ–8
ग्रामोद्योग (रेशम प्रभाग). (2013). आर्थिक सर्वेक्षण. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय. रायपुर : छत्तीसगढ़

सरकार, Access on 15/04/2014 available at http://www.descg.gov.in.

Electronic Documents

*http://www.csb.gov.in/silk-sericulture/sericulture/
*www.CSB.gov.in/stastics/silk/-bulletin/
*www.CSB.gov.in/stastics/silk-exports and imports.
*www.CSB.gov.in/stastics/silk-exports-and-imports/countrywise-import/
*www.CSB.gov.in/silk-sericulture/silks-of-india.
*PIB.nic in/archieve/others/2012/mar/d2012031302 pdf
*http://www.googal.co.in/webhp-source=search-app&gfe-rd=cr&ei=ikngu-f-exvv8gfjjocica #q=cottage+industries.

---

1. इंडियन सिल्क (2013, सितम्बर) भाग– 45, पृष्ठ –4
2. note on the performance of Indian silk industry and funcitioning of central silk board (Dec.2013) ministry of india
3.note on the performance of Indian silk industry and funcitioning of central silk board (Dec.2013) ministry of india
4 http://www/btsso.gov.in
5. दत्त आर.ए.(1990) 'भारत में उपनिवेषवाद' पृष्ठ – 94
6. भारतीय कृषि (2012–13) आर्थिक सर्वेक्षण, भारत सरकार च75
7.भारतीय कृषि (2012–13) आर्थिक सर्वेक्षण, भारत सरकार च75
8.इंडियन सिल्क (2013–दिसंबर) अवस – 50 पृष्ठ 10
9 इंडियन सिल्क (2013–दिसंबर) अवस – 50 पृष्ठ 10
10 .note on the performance of Indian silk industry and funcitioning of central silk board (Dec.2013) ministry of india
11. http://www.csb.gov.in assets/.../ar-0910EN.pd/..silk

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org